08 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मास्टर ज्ञान सूर्य बनने की प्रेरणा

व् बापदादा द्वारा तीन श्रृंगारका अनुभव

➢➢ बापदादा के द्वारा दिए गये भिन्न भिन्न स्वमान

➳_➳ आज अमृतवेले की पावन वेला में, मैं योगी, तपस्वी आत्मा अपने सूक्ष्म शरीर को धारण कर उड़ चली हूँ सूक्ष्म वतन की और

→ बुध्धि के नेत्र से, मैं आत्मा शिव बाबा को देख रही हूँ

■ धीरे धीरे परमधाम से प्राण प्यारे ज्योति बिंदु निराकार, प्राणेश्वर बाबा

▶ अपनी अनंत किरणें चारों और फैलाते हुए

→ सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा बाप की भृकुटी में बिराजमान होते है

■ और मुझ आत्मा को वरदानों से भरपूर करते है

· सर्व शक्तिमान बाबा के रूहानी नैनो से निकलती हुई दिव्य शक्तिशाली किरणों से मैं आत्मा स्वयं को भरपूर करती हूँ

→ ज्ञान सूर्य बाबा की किरणों से मुझ आत्मा का सारा व्यर्थ जलकर भस्म हो गया है

■ मैं आत्मा सदा स्वमान की सीट पर सेट हूँ

· मैं आत्मा बापदादा का श्रृंगार, ब्राह्मण कुल का श्रृंगार, विश्व का श्रृंगार, अपने घर का श्रृंगार हूँ

· मैं आत्मा बाबा के सिर का ताज हूँ, गले का हार हूँ

→ मैं आत्मा शांतिधाम में सर्व चमकते हुए सितारों के समान आत्माओ के बिच विशेष चमकती हुई मणि हूँ

■ मैं आत्मा बाबा के घर का श्रृंगार हूँ

· साकार सृष्टि अर्थात विश्व के अंदर, विश्व ड्रामा के अंदर

· हीरो पार्टधारी, विशेष पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मा हूँ अर्थात विश्व का श्रृंगार हूँ

➢➢ फर्स्ट नंबर की मणि का श्रृंगार (सिर का ताज)

➳_➳ मैं आत्मा चमकती हुई मणि हूँ

→ पहला श्रृंगार सिर के ताज में

■ मैं मस्तक बिच चमकती हुई मणि हूँ

· मैं आत्मा बाबा के सिर का ताज हूँ

· मैं मणि बाप समान चमकती हूँ

· मैं मणि मास्टर ज्ञान सूर्य बन चमक रही हूँ

· मैं आत्मा सूक्ष्म वतन में हूँ

→ मैं मास्टर ज्ञानसूर्य स्वरुप मणि अपनी सर्व शक्तियों रुपी किरणें वतन से चारो और फ़ैला रही हूँ

■ हर शक्ति रुपी किरणें विश्व में चारों और फ़ैल रही है

□ बेहद विश्व तक पहुच रही है

□ और सारे विश्व में व्याप्त अंधकार को दूर कर प्रकाश फैला रही हूँ

→ बाबा भिन्न भिन्न रंग से मुझ मणि का श्रृंगार कर रहे है

■ मास्टर गुणों के सागर के रंग में बाबा मुझ आत्मा को रंग रहे है

□ सर्व रंगों की रंगत से चमकती हुई मणि मुझ आत्मा के ताज की श्रेष्ठ शोभा है

→ मैं आत्मा विशेष मणि साकार रुप में मस्तक बिच चमकती हुई मणि हूँ

■ मैं आत्मा साकार सृष्टि में रहते हुए भी बुध्धिसे सदा बाप की याद में,

□ घर की याद में, राजधानी की याद में और ईश्वरीय सेवा की याद में लगाई हुई है

→ मैं आत्मा सदा उंची स्मृति, उंची वृति, उंची द्रष्टि और उंची प्रवृति में ही रहती हूँ

■ तभी मुझ आत्मा को उंचा स्थान अर्थात सिर का ताज प्राप्त हुआ है

□ सबसे उंचा श्रृंगार भी ताज ही है

→ क्युकी ताज ऊंचाई का भी सिम्बोल है

■ तो मालिकपन का भी सिम्बोल है

□ तो अधिकारीपन का भी सिम्बोल होता है

➢➢ दुसरे नंबर की मणि का श्रृंगार (गले का हार)

➳_ ➳ मैं आत्मा मस्तक मणि हूँ

→ सूक्ष्म वतन में हूँ

■ मैं आत्मा बापदादा के गले का हार हूँ

· मैं आत्मा अपनी चमक को चारो और फैला रही हूँ

➢➢ तीसरा नंबर की मणि का श्रृंगार (बाँहों का कंगन)

➳_ ➳ बाँहे सदा सहयोग की व् मददगार बनने की निशानी है

→ तो मैं आत्मा सदा सबकी मददगार बनती हूँ

■ सदा सबकी मन्सा वाचा कर्मणा से सहयोगी बनती हूँ

· मैं आत्मा सेवा अर्थ अपना तन मन धन लगाने में एवररेडी रहती हूँ

→ मैं आत्मा सदा बाप की स्नेह रुपी बाँहों में समाई हुई हूँ

- मैं आत्मा बाप की समीप व् बाप समान हूँ

  - बापदादा ने अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया

→ और मुझ आत्माको बाप समान सम्पन और सम्पूर्ण भव का वरदान दे रहे है

- तीनो श्रृंगार से मुझ आत्मा का श्रृंगार कर रहे है

  - चारो और लाइट माइट की किरणें फैलाती हुई मैं आत्मा वापस अपने देह में अवतरित हूँ